इकाई 5 समाज विज्ञान विषय का बोधन और निबंध रचना का परिचय

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 परिवार

5.3 निबंध रचना

5.4 व्याकरणिक विवेचन

- 5.4.1 प्रत्यय "त्व" /"ता"
- 5.4.2 प्रत्यय "य"
- 5.4.3 प्रत्यय "इक"
- 5.4.4 प्रत्यय "करण"

5.5 सारांश

5.6 शब्दावली

5.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

5.8 बोध प्रश्नों/अभ्यास के उत्तर

अनुकार्य

5.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- हिंदी में सामाजिक विज्ञान संबंधी विषय को समझकर अपने शब्दों में प्रकट कर सकेंगे;
- सामाजिक विज्ञान संबंधी विषय को पढ़कर उसकी शब्दावली का उचित प्रयोग कर सकेंगे;
- निबंध रचना के दौरान कथ्य को विस्तार और क्रमबद्धता दे सकेंगे;
- प्रत्यय को परिभाषित कर सकेंगे; और
- "इव", "त्व", "ता" "या" और "करण" प्रत्ययों के सही प्रयोग कर सकेंगे।

5.1 प्रस्तावना

आपने इकाई चार में भारत के विभिन्न त्योहारों के बारे में पढ़ा। आपने यह देखा कि त्योहार न केवल राष्ट्रीय और सामाजिक जीवन में हर्ष और उल्लास लाते हैं बल्कि वे सांस्कृतिक परंपराओं के संदर्भ में भावात्मक एकता के स्तर पर राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधते हैं। समाज त्योहारों के माध्यम से एकता का अनुभव करता है। हम सांस्कृतिक कारणों से त्योहार मनाते हैं और त्योहारों के माध्यम से संस्कृति को सुरक्षित रखते हैं। इस प्रकार त्योहारों के माध्यम से हमने संस्कृति विषय का अध्ययन किया। इस इकाई में हम "सामाजिक विज्ञान" विषय का अध्ययन करेंगे।

व्यक्ति संस्कृति की शिक्षा कैसे ग्रहण करता है? वह सामाजिक कार्यकलापों में किस रूप में भाग लेता है? उसका समाज से किस रूप में संबंध है? व्यक्तियों का समूह समाज है लेकिन व्यक्ति और समाज के बीच समाज के गठन में कुछ अन्य इकाइयाँ भी हैं, जैसे परिवार, जाति, धर्म आदि। इन इकाइयों में परिवार सबसे महत्वपूर्ण इकाई है। व्यक्ति परिवार में रहते हुए ही सामाजिक प्राणी बनता है। परिवार ही वह पाठशाला है जो व्यक्तियों को संस्कृति की शिक्षा देती है, व्यक्तियों को सामाजिक आचरण सिखाती है और व्यक्तियों में सामाजिक दायित्व की चेतना पैदा करती है।

इस इकाई में हम परिवार के संबंध में अध्ययन करेंगे और परिवार के गठन के आधार को देखेंगे। परिवार पहले किस रूप में थे और अब परिवार की रचना में क्या परिवर्तन आए हैं तथा इन परिवर्तनों के कारण क्या समस्याएँ उठ खड़ी हुई हैं, इसके बारे में भी पढ़ेंगे।

इस इकाई में हम निबंध रचना पर विचार करते हुए अपने विचारों को प्रस्तुत करने की विधि का अध्ययन करेंगे, जिससे कि आप स्वयं विभिन्न विषयों का लेखन करने की अपनी क्षमता बढ़ा सकें। इसके लिए हमने पूरे पाठ को विभिन्न खंडों में बाँटा है ताकि आप उतने भाग को पढ़कर इस खंड में जिस केंद्र बिंदु पर विचार किया गया है उसको पहचान कर उसके अनुसार उसका उचित शीर्षक दे सकेंगे। साथ ही, प्रत्ययों के अध्ययन द्वारा नये शब्द बनाना सीखेंगे इससे आप के भाषा प्रयोग की क्षमता में वृद्धि होगी। क्योंकि प्रत्यय से एक ही शब्द को कई रूपों और अर्थों में प्रयुक्त किया जा सकता है।

5.2 परिवार

1) हम आप सभी किसी-न-किसी परिवार के सदस्य हैं। हममें से कोई किसी का पिता है, कोई माँ, कोई किसी का भाई है या बहन, कोई पुत्र है या पुत्री। माँ पूरे घर के लिए खाना बनाती है, बच्चों को तैयार करके स्कूल भेजती है। पिता सुबह की काम पर चले जाते हैं और हर माह जो कमा कर लाते हैं, उससे घर चलता है। हममें से कई घरों में माँ भी काम पर जाती होंगी। कई घरों में बूढ़े दादा-दादी होंगे, जिनका सभी आदर करते हैं और जो सभी से गहरा स्नेह रखते हैं। कभी आपने सोचा है कि ऐसा क्यों है? क्यों माता-पिता अपने बच्चों के लिए इतना कष्ट उठाते हैं? क्यों माँ की डाँट खाकर भी बच्चे अपनी माँ से अत्यधिक प्यार करते हैं। आखिर यह परिवार क्या है, जो अपने सभी सदस्यों को गहरे प्रेम-सूत्र में बाँधे रखता है। क्या हम ऐसे समाज की कल्पना कर सकते हैं, जहाँ परिवार न हो।

2) निश्चय ही नहीं। संसार में कोई समाज ऐसा नहीं, जिसमें परिवार न हो। परिवार समाज की **आधारभूत** और अत्यंत व्यापक **इकाई** है। यह एक ऐसी सामाजिक संस्था है, जिसके कारण ही मानव समाज प्रगति कर सका है।

खंड अ .....

3) अब प्रश्न यह उठता है कि परिवार का इतना महत्व क्यों है? क्यों हम इसे समाज की आधारभूत और व्यापक इकाई कह रहे हैं। हम अपने परिवारों में अक्सर देखते हैं कि माता-पिता खुद तो कष्ट उठाते हैं, लेकिन बच्चों के सुख-दुःख का पूरा ख्याल रखते हैं और ऐसा ही व्यवहार बच्चे भी बड़े होने पर अपने माता-पिता के साथ करते हैं। सच्चाई यह है कि परिवार ही वह पाठशाला है जहाँ व्यक्ति त्याग और दूसरे के लिए जीने की प्रेरणा ग्रहण करता है और इस तरह समाज का अच्छा **नागरिक** होने के लिए अपने को तैयार करता है।

4) हम देखते हैं कि कैसे परिवार का प्रत्येक सदस्य अपने **संकीर्ण** स्वार्थों को त्याग कर **पूरे** परिवार के हित के लिए प्रयत्नशील रहता है, किस तरह सभी ऐसे भावनात्मक सूत्र में अपने को बँधा पाते हैं जो उन्हें प्रेरित करता है कि वे सिर्फ़ अपने लिए नहीं वरन् सभी के लिए जियें, सभी के सुख-दुःख में सहभागी बनें। इसी भावनात्मक सूत्र के

कारण व्यक्ति अपने **व्यक्तित्व** का विकास और विस्तार करता है। वह न केवल अपने लिए, बल्कि दूसरे के लिए भी जीना सीखता है। परिवार में सदस्यों के पारस्परिक स्नेह, **सौहार्द** और त्याग-भावना उसे यह सीख देती है कि वह समाज नामक **बृहत्तर** इकाई के प्रत्येक सदस्य के प्रति भी इन्हीं भावनाओं से संचालित हो।

5) इस बात को हम दूसरे रूप में भी देख सकते हैं। आप जानते हैं कि परिवार में कोई एक ऐसा सदस्य ज़रूर होता है जो कहीं-न-कहीं, किसी-न-किसी व्यवसाय या नौकरी से जुड़ा होता है। जैसे कोई अध्यापक है तो कोई व्यापारी है, कोई किसान है तो कोई मज़दूर है, कोई सैनिक है तो कोई पुलिस की नौकरी में है। तात्पर्य यह है कि किसी-न-किसी व्यवसाय से जुड़कर वह प्रतिमाह कुछ रुपये कमाकर लाता है और उसी आय से उसका घर चलता है। भोजन, वस्त्र और **आवास** का प्रबंध होता है, बच्चों की पढ़ाई का खर्च चलता है,बीमार की चिकित्सा होती है। ज़ाहिर है जीवनयापन के लिए यह आवश्यक है कि परिवार का कम-से-कम एक सदस्य अवश्य कमाये।

6) क्या कभी आपने सोचा है कि व्यक्ति इस तरह कोई नौकरी या व्यवसाय कर सिर्फ़ अपने और अपने परिवार के जीवन-निर्वाह का ही प्रबंध करता है या उसका यह कार्य पूरे समाज के लिए भी ज़रूरी है? एक उदाहरण से इस बात को समझें। एक किसान अपने खेत में जो पैदा करता है उसे मंडी में बेचकर रुपये घर लाता है। इससे वह अपने परिवार के लिए अन्य ज़रूरी चीज़ों का प्रबंध करता है। जबकि उसी का बेचा हुआ अनाज दूसरे वे लोग जो किसान नहीं हैं, **मंडी** से खरीदकर घर लाते हैं ताकि उनके परिवार के लिए भोजन की व्यवस्था हो सके। इस प्रकार हम सभी किसी-न-किसी ऐसे काम से जुड़े हैं, जिनसे हमें आय होती है और उस आय से हम अपने परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। लेकिन हमारे काम से दूसरों की ज़रूरतें भी पूरी होती हैं। किसान अनाज उगाता है, मज़दूर कारखानों में कई तरह की चीज़ें बनाता है, अध्यापक शिक्षा देता है, डॉक्टर लोगों के रोगों का इलाज करता है, सैनिक व पुलिस देश और देशवासियों की रक्षा करते हैं। इस तरह परिवार के लिए जीवनयापन की व्यवस्था करते हुए हम सभी **सामाजिक उत्पादन** की प्रक्रिया से अपने को जोड़ते हैं और इसी से सामाजिक प्रगति में हमारी भागीदारी निश्चित होती है।

7) हम जब यह देखते हैं कि हमारे अपने परिवार के लिए समाज के दूसरे लोगों द्वारा किये गये कार्यों का कितना महत्व है, तो हममें समाज के प्रति कृतज्ञता का भाव पैदा होता है। यह **बोध** हमें समाज के प्रति और अधिक उत्तरदायित्वपूर्ण बनाता है और हम उसकी उन्नति के लिए अधिक सक्रिय होते हैं। हमारी इस भावना का असर हमारे बच्चों पर भी पड़ता है। वे भी अपने माता-पिता की तरह समाज और राष्ट्र से प्रेम करना सीखते हैं, उनकी रक्षा और उन्नति में अपना योग देना चाहते हैं। इस तरह व्यक्ति राष्ट्र के बेहतर नागरिक बनने की शिक्षा परिवार से प्राप्त करता है।

खंड आ.....

8) हमने ऊपर परिवार नामक इकाई के महत्व की चर्चा की और परिवार तथा समाज के संबंध की जानकारी प्राप्त की। अब हम यह जानना चाहेंगे कि परिवार की रचना या उसका गठन क्या है? परिवार के सदस्य कौन-कौन होते हैं? परिवार चलाने का दायित्व किस पर होता है आदि।

9) आज जब हम परिवार की चर्चा करते हैं तो उसका अर्थ होता है माता, पिता और उनके अविवाहित पुत्र-पुत्रियाँ। जब लड़की की शादी हो जाती है तो वह अपने ससुराल चली जाती है और लड़के भी अपना काम शुरू करने के बाद विवाह होते ही अपना अलग घर बसा लेते हैं। लेकिन आज जिन छोटे परिवारों को हम देखते हैं, हमेशा से ऐसे ही परिवार नहीं थे। आज से केवल कुछ **दशक** पहले ही, हमारे देश में, संयुक्त परिवार का आम प्रचलन था। इस तरह के परिवारों में दादा, दादी थे और थे दादा के भाई, इन सभी के विवाहित पुत्र और उनकी संतान और इनमें भी जिन लड़कों का विवाह हो गया हो उनकी संतानें। लड़कियाँ अवश्य विवाह कर अपनी ससुराल चली

जाती थीं और अपनी ससुराल की सदस्य मानी जाती थीं। पूरे घर में एक ही चूल्हा जलता था। परिवार की कुल संपत्ति, परिवार के सभी सदस्यों की साझा संपत्ति मानी जाती थी। परिवार का मुखिया, सबसे बड़ी उम्र का व्यक्ति (पुरुष) होता था, जिसका पूरे परिवार पर नियंत्रण होता था। संयुक्त परिवार और आज के परिवार के अंतर को नीचे के आरेखों से समझा जा सकता है :

आरेख 1

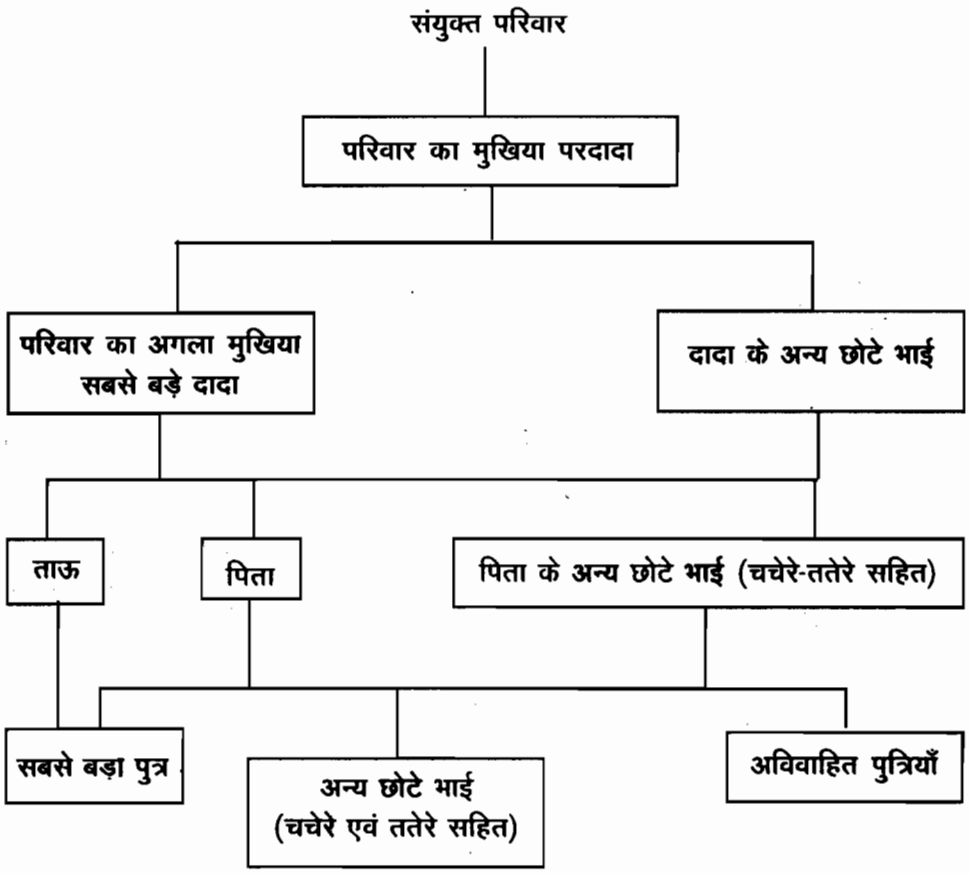

10) संयुक्त परिवार के आरेख से स्पष्ट है कि इसमें परदादा का परिवार, दादा एवं उनके भाई और उन सबका परिवार, ताऊ, पिता एवं चाचाओं का परिवार एवं अविवाहित पुत्रियाँ सम्मिलित हैं। परिवार का मुखिया घर का सबसे बड़ा पुरुष होता था। परदादा के जीवित रहने तक वे परिवार के मुखिया होते थे और उनके बाद सबसे बड़े दादा मुखिया होते थे। इस तरह परिवार का मुखिया सबसे बड़ी पीढ़ी के सबसे बड़े पुरुष को माना जाता था। इसके विपरीत आज के छोटे परिवार का आरेख देखें:

आरेख 2

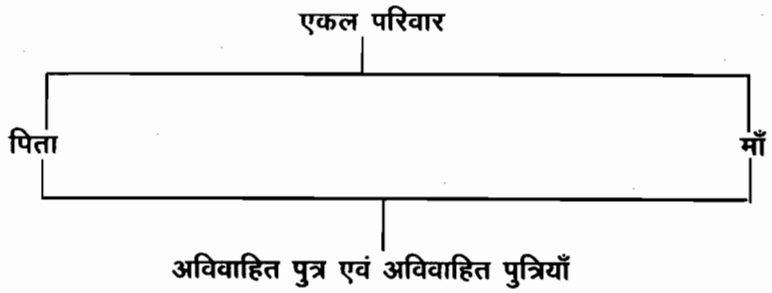

11) ऊपर के दोनों आरेखों से स्पष्ट है कि संयुक्त परिवार आज के एकल परिवारों का संयुक्त रूप था, जबकि आज का एकल परिवार दूसरी पीढ़ी में प्रवेश करते ही नये परिवारों को जन्म दे देता है। प्रश्न यह है कि संयुक्त परिवार क्यों बिखर गया? ऐसे कौन से कारण थे, जिनसे संयुक्त परिवार का रूप बदलने लगा?

खंड इ .....

12) अगर हम मानव-सभ्यता के विकास का अध्ययन करें तो हम पाते हैं कि परिवार नामक संस्था सदैव एक-सी नहीं रही है। यद्यपि, यह भी सही है कि सभी मानव समाजों में और सामाजिक विकास के सभी स्तरों में इसे किसी-न-किसी रूप में अवश्य देखा जा सकता है। वस्तुतः परिवार का विकास समाज के विकास से जुड़ा है। जिसे हम संयुक्त परिवार कहते हैं वह जिस सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था की देन था, वह व्यवस्था आज नहीं है। आज हम एक नई तरह की सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था में जी रहे हैं। इसी नयी व्यवस्था ने उस नये परिवार को जन्म दिया है जिसे 'एकल परिवार' कहते हैं और जिसमें माता-पिता और अविवाहित संतान आते हैं।

13) संयुक्त परिवार का संबंध जिस समाज व्यवस्था से था, उसमें सामाजिक विकास मुख्यतया कृषि पर आधारित था और कृषि उत्पादन का ढाँचा **सामंती** था। आज जिन आधुनिक मशीनों को हर कहीं देखते हैं, वे उस समय तक अस्तित्व में नहीं आई थीं। खेती के भी आधुनिक उपकरण नहीं थे। लोग हाथ से बने औज़ारों का इस्तेमाल करके अपने लिए ज़रूरी चीज़ों का निर्माण करते थे। किसान का पूरा परिवार एक ही ज़मीन पर खेती करता था और उससे होने वाली आय पर सभी का सम्मिलित अधिकार होता था। लोग नौकरी-पेशे में बहुत कम थे, ज्यादातर लोग पारिवारिक काम-धंधों में लगे हुए थे जो उन्हें परिवार की परंपरा से प्राप्त होता था। उदाहरण के लिए, लुहार लोहे का औज़ार बनाता था। उसे यह काम अपने दादा और पिता से विरासत में मिला होता था और यही व्यवसाय वह अपने बच्चों के लिए छोड़ जाता था। पूरा परिवार **पुश्तैनी** धंधे में लगता था, चाहे वे ज़मींदार हों, चाहे किसान, चाहे वे पुरोहित का काम करते हों, चाहे व्यापार करते हों। इसलिए लोगों को नौकरी या व्यवसाय के लिए दूर नहीं जाना पड़ता था, न ही एक परिवार के विभिन्न सदस्यों की आय अलग-अलग होती थी। उनका **सामूहिक श्रम** ही सामूहिक संपत्ति को पैदा करता था इसलिए उस पर उन सबका अधिकार होता था।

14) संयुक्त परिवार की एक विशिष्टता यह भी थी कि वह **पितृसत्तात्मक** समाज की देन था। परिवार की सामूहिक संपत्ति पर पुत्रियों का कोई अधिकार नहीं माना जाता था, उनका अधिकार उनकी ससुराल में माना जाता था। सम्पन्न एवं उच्च वर्ग के संयुक्त परिवारों में घर से बाहर के कार्यों में स्त्रियों की किसी तरह की भागीदारी नहीं होती थी। उन्हें जीवन-निर्वाह के लिए पूरी तरह पुरूषों पर निर्भर रहना पड़ता था। लेकिन निम्न वर्ग एवं गरीब तबके की स्त्रियाँ घर के बाहर भी काम करती थीं, देहाती क्षेत्रों में यह स्थिति अब भी प्रायः बनी हुई है।

15) निश्चय ही संयुक्त परिवार में कई गुण थे तो कुछ अवगुण भी थे। कम-से कम स्त्रियों के मामले में तो वह न्यायशील नहीं था। हाँ, यह अवश्य था कि संयुक्त परिवार में सभी को एक तरह की सामाजिक सुरक्षा प्राप्त थी। परिवार के किसी भी सदस्य के साथ कोई दुर्घटना हो जाती थी तो उसके बीवी-बच्चों को भूखों नहीं मरना पड़ता था। लेकिन लोगों के वैयक्तिक गुणों के विकास के अवसर ऐसे परिवारों में बहुत सीमित थे। लोगों को अपनी ऐसी इच्छाएँ त्यागनी पड़ती थीं जो परिवार की परंपरा और रिवाज़ों के अनुकूल नहीं मानी जाती थीं। वहाँ परिवार का ढाँचा **सर्वोपरि** था, व्यक्ति का स्थान नहीं।

16) समय की करवट के साथ संयुक्त परिवार धीरे-धीरे टूटने लगा। क्योंकि एक नयी समाज व्यवस्था ने इस संस्था के चले आ रहे पुराने रूप पर दबाव डालना शुरू कर दिया था। मशीनों के अविष्कार ने पुरानी उत्पादन पद्धति को खारिज कर नयी पद्धति

विकसित की और इसके कारण पुरानी उत्पादन पद्धति धीरे-धीरे कम हो गयी। जब आधुनिक संयंत्रों पर कम समय में और कम लागत पर कपड़ा बनने लगा तो हाथ करघा उद्योग समाप्त होने लगा। इस प्रक्रिया में हाथ करघे पर आश्रित संयुक्त परिवार बिखरने लगे। इन नयी मशीनों ने **पुंजोत्पादन** (mass production) को जन्म दिया और इसके लिए बड़े-बड़े कारखाने स्थापित किये गये और इस तरह औद्योगीकरण की शुरूआत हुई। एक-एक कारखाने में एक साथ हज़ारों मज़दूर काम करने लगे और इस तरह **शहरीकरण** की प्रक्रिया शुरू हुई। **औद्योगीकरण** के कारण पुराने उद्योग-धंधे से अलग हुए लोग नये काम-धंधे की तलाश करने लगे। परिणाम यह हुआ कि लोग निजी धंधों की बजाय नौकरी और मज़दूरी में जाने लगे और इस तरह निजी आय का जन्म हुआ।

17) एक ही परिवार के तीन भाई तीन अलग-अलग कार्यों में लगे हो सकते हैं और नौकरी के लिए अलग-अलग शहरों में रह सकते हैं। अगर सभी भाई एक ही शहर में रहते हों तो भी उनका एक साथ रहना संभव नहीं था, क्योंकि काम के अनुसार आय होने के कारण उनकी आय भी अलग-अलग होने लगी थी। ऐसे में उन तीन भाइयों को केवल भावनात्मक स्तर पर एक ही परिवार बनाए रखना असंभव हो गया था। मान लीजिए, एक भाई की आय प्रति माह एक हजार रुपये, दूसरे की दो हज़ार रुपये और तीसरे की तीन हज़ार रुपये है तो उनकी यह इच्छा स्वाभाविक है कि वे अपनी आय के अनुसार अपने बीवी-बच्चों का पालन-पोषण करें। यह एक महत्वपूर्ण कारण था जिसने संयुक्त परिवार में टूटन पैदा की और जैसे-जैसे समाज आधुनिक होता चला गया और पुराना सामाजिक ढाँचा टूटता चला गया, वैसे-वैसे संयुक्त परिवार भी एकल परिवार में बिखरता चला गया। यह सामाजिक विकास की स्वाभाविक प्रक्रिया है, जिसे स्वीकार करने में हिचक नहीं होनी चाहिए।

18) औद्योगीकरण के साथ आरंभ हुई शहरीकरण की प्रक्रिया ने कई ऐसे काम किये जो इससे पूर्व की किसी व्यवस्था ने इतने बड़े पैमाने पर नहीं किये थे। जैसे-जैसे तकनीकी विकास बढ़ता गया, उसे लोगों तक पहुँचाने और उसमें प्रशिक्षित करने के लिए आधुनिक शिक्षा प्रणाली की जरूरत भी बढ़ती गई और इस तरह स्कूलों, कालेजों, विश्वविद्यालयों का जाल फैलता चला गया। इस नई शिक्षा ने लोगों की चेतना को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है क्योंकि यह नयी शिक्षा उन नये विचारों पर आधारित थी जो नयी समाज व्यवस्था के साथ उत्पन्न हुए थे।

खंड ई.....

19) अब यह माना जाने लगा कि प्रत्येक व्यक्ति समान है— चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, चाहे जिस धर्म को मानता हो, चाहे किसी **जाति,** संप्रदाय या **नस्ल** का हो, कोई भी भाषा बोलता हो। उनमें धर्म, जाति, नस्ल, भाषा और लिंग के आधार पर भेदभाव करना अनुचित और अन्यायपूर्ण है। चाहे सामाजिक समता की बात हो, चाहे न्याय पाने का हक हो, चाहे राजनीतिक अधिकार हो, समता की भावना ही आज लोकतंत्र का आधार है। यह भी माना जाने लगा कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व के विकास के पूरे अवसर मिलने चाहिए। सामाजिक प्रगति में बाधक न हो वहाँ तक उसे स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए। यह भी कहा गया कि संपूर्ण **मानवता** एक है, इसलिए प्रत्येक इन्सान को दूसरे के प्रति **बंधुत्व** का भाव रखना चाहिए। किसी को हीन या छोटा नहीं समझना चाहिए। इस तरह स्वतंत्रता, समानता और **बंधुत्व** के आदर्शों ने एक नयी व्यवस्था को जन्म दिया, जिसे लोकतंत्र कहते हैं। यहाँ हम पढ़ेंगे कि लोकतंत्र की अवधारणा ने परिवार पर किस तरह का असर डाला।

20) लोगों में यह धारणा विकसित हुई कि परिवार के प्रत्येक सदस्य के बीच स्वतंत्रता और समानता का संबंध हो। दूसरा असर यह हुआ कि अब स्त्रियाँ भी परिवार के जीवन-निर्वाह में अपना योग देने के लिए सामाजिक कार्यों में सक्रिय हुईं और इस तरह पति-पत्नी ने घर और बाहर के कार्यों में समान भागीदारी की शुरुआत की। यह पति-पत्नी

के संबंधों में मूलभूत परिवर्तन था क्योंकि अब वे दोनों सही अर्थों में सहचर और मित्र बने।

21) इन नये विचारों ने ऐसे सामाजिक आंदोलनों को जन्म दिया, जिसके कारण स्त्रियाँ कई कुप्रथाओं जैसे — बालविवाह, वैधव्य, सती-प्रथा, बहुविवाह आदि से मुक्त हो सकीं। पहले विवाह एक अटूट बंधन था और स्त्री को जीवन भर एक पुरुष से बंधा रहना पड़ता था चाहे उसका पति कितना ही नाकारा और निर्दयी क्यों न हो। लेकिन नयी समाज व्यवस्था ने स्त्रियों को भी **संबंध विच्छेद** का अधिकार देकर उन्हें पराधीनता से मुक्त किया।

22) आप लोगों के मन में कई शंकाएँ उठ रही होंगी। जिन बड़े परिवर्तनों की चर्चा हमने ऊपर की है उनके बावजूद आपको ऐसी कई समस्याएँ नज़र आती होंगी जो हमारे घर-परिवारों में मौजूद हैं या जो गैर भारतीय समाजों में मौजूद हैं और जिनके बारे में हम अक्सर पढ़ते रहते हैं। हम में से कोई कह सकता है कि तलाक़ के अधिकार ने परिवार नामक संस्था को खतरे में डाल दिया है। यह भी कहा जा सकता है कि आज व्यक्ति सिर्फ़ अपने बीबी-बच्चों को ही दायित्व मानता है। इस कारण बूढ़े और अक्षम माता-पिता को अकेलेपन और कटुता से भरा जीवन जीने को विवश होना पड़ता है। इनके अलावा और भी समस्याएँ हो सकती हैं। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि परिवर्तन से गुज़रते हुए समाज को बाधाओं से जूझना ही पड़ता है। जब नयी मान्यताएँ जन्म लेती हैं तो उनके साथ नयी समस्याओं का भी जन्म होता है। हाँ, अगर हम मानते हैं कि स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व महान गुण हैं तो हमें परिवार में आए बदलाव को स्वीकार करना होगा और इस नये बदलाव से उत्पन्न समस्याओं के **निराकरण** का रास्ता भी वर्तमान व्यवस्था के बीच से ही ढूँढना पड़ेगा।

बोध प्रश्न

1) नीचे जो वाक्य दिये गये हैं उनमें से कुछ तथ्य की दृष्टि से सही हैं कुछ गलत हैं। बताइए कि कौन से वाक्य सही हैं कौन से गलत।

   i) परिवार समाज की आधारभूत इकाई है। ( ) सही ( ) गलत

   ii) परिवार ही वह पाठशाला है जहाँ व्यक्ति स्वार्थ और लोभ की शिक्षा ग्रहण करता है ( ) सही ( ) गलत

   iii) सामंती समाज में बड़े-बड़े उद्योग थे। ( ) सही ( ) गलत

   iv) संयुक्त परिवार में सभी को सामाजिक सुरक्षा प्राप्त थी। ( ) सही ( ) गलत

   v) शहरीकरण ने औद्योगीकरण की शुरुआत की। ( ) सही ( ) गलत

2) नीचे दिये गये शब्दों में से जो सही शब्द लगे उन्हें रिक्त स्थानों में लिखिए।

   (संपत्ति, पितृसत्तात्मक, व्यक्तित्व, श्रम, शिक्षा, समानता)

   i) परिवार में.....का विस्तार होता है।

   ii) सामूहिक.....ही सामूहिक.....को पैदा करता है।

   iii) .....समाज में पुरुष स्त्रियों से श्रेष्ठ माने जाते थे।

   iv) स्वतंत्रता और.....के विचारों ने परिवार पर भी अपना प्रभाव डाला।

   v) नये विचारों को फैलाने में.....ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

3) नीचे कुछ शब्दों के समूह दिये गये हैं, जिनमें कोई एक शब्द ऐसा है जिसकी उस शब्द समूह के अन्य शब्दों से संगति नहीं बैठती। बताइए।

i) ताऊ, मामा, चाचा, दादा

ii) स्नेह, प्रेम, त्याग, लगाव

iii) स्वतंत्रता, समानता, जनता, बंधुत्व

iv) सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, तात्कालिक

4) नीचे दिये गये वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कोष्ठकों में दिए गये शब्दों में से कीजिए।

i) संयुक्त परिवार में घर का मुखिया.....होता है। (पिता, दादा, सबसे बड़ी उम्र का पुरुष)

ii) संयुक्त परिवार का संबंध.....व्यवस्था से था। (सामंती, प्राचीन, धार्मिक)

iii) पुंजोत्पादन का संबंध.....से है। (एकल परिवार, शहरीकरण, औद्योगीकरण)

iv) एकल परिवार में लोगों के.....गुणों के विकास के बेहतर अवसर हैं। (जैविक, भौतिक, वैयक्तिक)

v) संपूर्ण मानवता एक.....अवधारणा है। (वैयक्तिक, लोकतांत्रिक, धार्मिक)

5) i) श्यामलाल के परिवार में उनकी पत्नी और बच्चे रहते हैं साथ में उनके माता-पिता भी रहते हैं जबकि श्यामलाल के भाई रामलाल के साथ उनकी पत्नी और छोटे बच्चों के अतिरिक्त एक अविवाहित बहिन भी रहती है। बताइये, ये दोनों परिवार किस श्रेणी में आयेंगे।

क) दोनों संयुक्त परिवार

ख) पहला संयुक्त, दूसरा एकल

ग) दोनो एकल परिवार

घ) पहला एकल दूसरा संयुक्त [ ]

ii) संयुक्त परिवार में टूटन का कारण था

क) लोग स्वार्थी हो गए थे।

ख) लोगों में धर्म-भावना नहीं रही।

ग) देश आज़ाद हो गया था।

घ) सामाजिक व्यवस्था में मूलभूत बदलाव आया। [ ]

6) नीचे कुछ प्रश्न दिये गये हैं। इनके उत्तर दो-तीन पंक्तियों में दीजिए।

i) परिवार में व्यक्तित्व का विस्तार कैसे होता है?

.....

.....

ii) सामाजिक प्रगति में परिवार की क्या भूमिका है?

.....

.....

iii) एकल परिवार का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

iv) एकल परिवार से उत्पन्न दो समस्याओं का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

v) संयुक्त परिवार में स्त्रियों की क्या स्थिति थी?

.....

.....

अब तक आपने जो बोध प्रश्न किये हैं उनसे पता लग गया होगा कि आपने पाठ को कितना ध्यान से पढ़ा है। अब जो अभ्यास दिये जा रहे हैं, उनसे यह मालूम होगा कि आपने पाठ को विषय और भाषा दोनों दृष्टियों से कितना समझा है।

अभ्यास

1) पाठ के कुछ वाक्य नीचे दिये गये हैं। इन वाक्यों के तात्पर्य दिये गये तीन कथनों में से एक सबसे सही रूप में व्यक्त करता है। उस वाक्य को बताइए।

i) सच्चाई यह है कि परिवार ही वह पाठशाला है जहाँ व्यक्ति त्याग और दूसरे के लिए जीने की प्रेरणा ग्रहण करता है और इस तरह समाज का अच्छा नागरिक होने के लिए अपने को तैयार करता है।

क) अच्छे नागरिकों को ही त्याग और दूसरों के लिए जीने की प्रेरणा परिवार में मिलती है।

ख) अच्छे नागरिक होने की शिक्षा वस्तुतः परिवार में ही मिलती है।

ग) जहाँ व्यक्ति त्याग और दूसरे के लिए जीने की प्रेरणा ग्रहण करता है और समाज का अच्छा नागरिक बनता है वही उसका परिवार है। [ ]

ii) यह अवश्य था कि संयुक्त परिवार में सभी को एक तरह की समाजिक सुरक्षा प्राप्त थी।

क) समाज संयुक्त परिवार को पूर्ण सुरक्षा प्रदान करता है।

ख) संयुक्त परिवार के सदस्य चोरी, डकैती, आगजनी, बीमारी आदि से सुरक्षित रहते हैं।

ग) जिस व्यक्ति की आय पर एकल परिवार टिका होता है, उसकी मृत्यु से पूरा परिवार असुरक्षित हो जाता है। [ ]

iii) लोकतंत्र की अवधारणा ने परिवार पर भी अपना असर डाला।

क) लोगों में स्वतंत्रता और समता की भावनाएँ जागी।

ख) लोकतंत्र ने परिवार के वयस्क सदस्यों को मताधिकार दिया।

ग) लोकतंत्र के कारण ही संयुक्त परिवार टूटे। [ ]

iv) परिवर्तन से गुज़रते हुए समाज को बाधाओं से जूझना ही पड़ता है।

क) बाधारहित और शांतिपूर्ण समाज के लिए सामाजिक परिवर्तन अनावश्यक है।

ख) हर सामाजिक परिवर्तन के साथ कुछ नई समस्याएँ उठ खड़ी होती हैं।

ग) हमें बिना बाधाओं के समाज में परिवर्तन लाना चाहिए। [ ]

2) कोष्ठक में दिये गये दो शब्दों में से सही शब्द को रखें एवं गलत शब्द को काटें जिससे वाक्य सार्थक बन जाए।

i) परिवार (आर्थिक/सामाजिक) संस्था है।

ii) परिवार के सदस्य (भावनात्मक/विचारात्मक) सूत्र में बँधे होते हैं।

iii) खेती करने वाला किसान (जीवनयापन/सामाजिक दायित्व) के लिए काम करता है लेकिन वह साथ-साथ समाज को (धन/योगदान) भी देता है।

iv) संयुक्त परिवार में समस्त संपत्ति (मुखिया/समस्त परिवार) की समझी जाती थी।

v) (कृषि/उद्योग) प्रधान अर्थव्यवस्था संयुक्त परिवार का आधार होती है।

vi) सामंती व्यवस्था में आमतौर पर लोग (अपनी इच्छा से/पुश्तैनी) धंधा करते हैं।

vii) संयुक्त परिवार में परिवार के (ढाँचे/सदस्यों) का अधिक महत्व था।

viii) औद्योगीकरण की शुरुआत ने एकल परिवार को (जन्म दिया/तोड़ा)।

ix) (समता/प्रगति) की भावना ही लोकतंत्र का आधार है।

x) एकल परिवार का अच्छा परिणाम था (नारी स्वातंत्र्य/नयी सामाजिक व्यवस्था)।

5.3 निबंध-रचना

हम आशा करते हैं कि आपने पाठ को ध्यान से पढ़ा होगा। आप यह भी पहचान गये होंगे कि इस पाठ की संरचना निबंध के रूप में हुई है। प्रत्येक निबंध का कोई मूल कथ्य होता है। जिसे पूरे निबंध में लेखक विस्तार देता है। क्या आप बता सकते हैं कि इस पाठ का मूल कथ्य क्या है? आइए, हम आपकी सहायता के लिए मूल कथ्य को पहचानने के कुछ आधार-बिंदु प्रस्तुत करते हैं :

1) परिवार : एक सामाजिक इकाई

2) सामाजिक उन्नति में परिवार की भूमिका

3) भारतीय परिवारों के स्वरूप में आए विभिन्न परिवर्तन

4) संयुक्त परिवार से एकल परिवार बनने के कारण

5) एकल परिवार से उत्पन्न समस्याएँ

इस पाठ में उपर्युक्त आधार बिंदुओं का विकास हुआ है? इसकी परीक्षा आप स्वयं कर सकते हैं।

किसी भी निबंध (या पाठ) के मूल कथ्य के आधार पर ही निबंध का शीर्षक दिया जाता है। जैसे इस पाठ का शीर्षक **परिवार** दिया गया है। क्या आप इसके अलावा भी कोई शीर्षक सुझा सकते हैं। विचार कीजिए और बताइए।

निबंध के विचारों में तार्किक क्रमबद्धता होनी चाहिए। यह इसलिए ज़रूरी है ताकि पाठक निबंध पढ़ते समय लेखक के कथ्य को सही रूप में और स्पष्टता के साथ ग्रहण कर सकें, साथ ही लेखक की विचार प्रणाली को भी समझ सकें। उदाहरण के लिए आप इस पाठ के

पैरा 1 और 2 को पढ़िए। इनको पढ़ने से क्या आपको इस बात की जानकारी नहीं मिलती कि प्रस्तुत निबंध किस विषय पर है। अर्थात् किसी भी निबंध का आरंभ विषय के परिचय से होता है। इसे **प्रस्तावना** या **विषय प्रवेश** कहते हैं।

इसके बाद तीसरे, चौथे पैरों को पढ़िए। तीसरे पैरे का मूल कथ्य क्या है? यहाँ उस पैरे की दो पंक्तियाँ उद्धृत करते हैं।

सच्चाई यह है कि ..... अपने को तैयार करता है। इसी तरह पैरा 4 की निम्न पंक्तियाँ देखिए।

परिवार के सदस्यों के ..... भावनाओं से संचालित थे।

इन दोनों पैरों को पढ़ने और उपर्युक्त पंक्तियों पर गौर करने के बाद आप आसानी से बता सकते हैं कि लेखक इनमें क्या कहना चाहता है। हाँ, आपका अनुमान सही है, लेखक कहना चाहता है कि "परिवार में ही व्यक्ति समाज के प्रति अपने दायित्व का बोध करता है।"

क्या आप इस कथ्य पर इन दोनों पैरों का कोई उपयुक्त शीर्षक दे सकते हैं?

आइए हम आपको एक उपयुक्त शीर्षक सुझाते हैं — परिवार में सामाजिकता की शिक्षा।

इस तरह प्रत्येक निबंध में लेखक (1) अपने विचारों को धीरे-धीरे क्रमबद्ध रूप में विकसित करता है। (2) उसके विभिन्न पक्षों को समझाता है (3) उनमें अन्तःसंबंध बताता है और अंत में (4) अपने कथ्य को सार रूप में सूत्रबद्ध करता है।

आप इस पाठ को उपर्युक्त विश्लेषण के संदर्भ में ध्यान से पढ़िए और खंड अ, आ, इ, ई के उचित शीर्षक दीजिए।

निबंध के मूल कथ्य की विस्तृत विवेचना के बाद लेखक अंत में अपने पाठ को समेटता है। इसके लिए (1) वह पूरे पाठ का सार प्रस्तुत करता है या (2) किसी ऐसे विचार बिंदु पर वह पाठ का अंत करता है, जिससे विषय को पूर्णता प्राप्त हो या (3) मूल कथ्य से उत्पन्न किसी नये विचार बिंदु का संकेत करता है, जिसके आधार पर उस निबंध के नये पक्षों का संकेत मिलता हो।

आप इस पाठ के पैरा 22 को पढ़िए और बताइए कि इसमें पाठ का सार किस रूप में दिया गया है।

विचारों का विस्तार

आइए, अब हम एक नये बिंदु पर विचार करते हैं। पैरा 16 को ध्यान से पढ़िए। इस पैरे में संयुक्त परिवार के टूटने के कारणों को बताया गया है। देखें कि लेखक ने अपने विचारों को किस तरह विस्तार दिया है। पैरा 15 में संयुक्त परिवार की विशेषताओं का वर्णन किया गया है।

पैरा 16-पंक्तियाँ

- समस्या का उल्लेख (संयुक्त परिवार का टूटना)
- समस्या का कारण (नयी सामाजिक व्यवस्था का दबाव)
- नयी सामाजिक व्यवस्था की प्रमुख विशेषता का उल्लेख (पुरानी उत्पादन पद्धति की जगह नयी उत्पादन पद्धति का आगमन)
- नयी उत्पादन पद्धति की प्रमुख विशेषता (कम समय और कम लागत में उत्पादन)
- नयी उत्पादन पद्धति का संयुक्त परिवार पर प्रभाव (पुरानी उत्पादन पद्धति पर आश्रित संयुक्त परिवारों का बिखरना)

- नयी उत्पादन पद्धति से सामाजिक व्यवस्था में होने वाला परिवर्तन (औद्योगीकरण)
- औद्योगीकरण के प्रमुख प्रभाव (शहरीकरण और नये काम की तलाश)
- इससे सामाजिक जीवन में आई नयी विशिष्टता (निजी आय का जन्म)

पैरा 17 में लेखक ने निजी आय के जन्म से संयुक्त परिवार पर पड़ने वाले प्रभाव का विस्तृत परिचय दिया है।

इस तरह हम उपर्युक्त पैरा 16 में पाते हैं कि :

- यह पैरा पिछले पैरे में व्यक्त विचारों को नया मोड़ देता है।
- इस पैरा में जो विचार व्यक्त किये गये हैं वे एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।
- प्रत्येक पंक्ति में व्यक्त किया गया विचार पूर्व की पंक्ति में व्यक्त विचारों में कुछ नया जोड़ता है।
- प्रत्येक पंक्ति में व्यक्त विचार तार्किक क्रमबद्धता से आगे बढ़ते हैं।
- पूरे पैरा में एक पूर्ण विचार श्रृंखला दिखाई देती है, जिसके अंत में एक नये वैचारिक बिंदु का संकेत किया गया है।
- इसी नये विचार बिंदु का अगले (17 वें) पैरा में विस्तार है।

आप पैरा 16 के उपर्युक्त विवेचन से समझ गए होंगे कि किसी भी निबंध में किस तरह विचारों को विस्तार दिया जा सकता है। आप अन्य पैरों का उक्त बिंदुओं के आधार पर विवेचन कीजिए और बताइए कि क्या उनमें उपर्युक्त नियमों का पालन किया गया है।

5.4 व्याकरणिक विवेचन

पाठ को पढ़ते हुए आपने देखा होगा कि इसमें सामाजिक, आर्थिक, नागरिक जैसे शब्दों का प्रयोग अधिक हुआ है। इसी तरह व्यक्ति, बंधुत्व, मानवता जैसे शब्द भी प्रयुक्त हुए हैं। ये शब्द 'इक', 'त्व', या 'ता' प्रत्यय जुड़कर बने हैं। इनके बारे में हम यहाँ कुछ जानकारी हासिल करेंगे।

5.4.1 प्रत्यय 'त्व'/ 'ता'

i) 'त्व' या 'ता' प्रत्यय जातिवाचक संज्ञा या विशेषण को भाववाचक संज्ञा में बदलने के लिए प्रयुक्त होते हैं। जैसे -

कवि - कवित्व	मानव - मानवता
बंधु - बंधुत्व	महत् - महत्ता
सुंदर - सुंदरता	

ii) 'ता' प्रत्यय लगने से शब्द स्त्रीलिंग और 'त्व' प्रत्यय लगने से पुल्लिंग बनते हैं।

जैसे — गांधीजी की मानवता हमारा आदर्श है।

गांधीजी का व्यक्तित्व महान था।

iii) कुछ शब्दों में 'त्व' 'ता' दोनों प्रत्यय लग सकते हैं और अर्थ में अंतर नहीं आता।

जैसे — बंधुत्व और बंधुता

महत्त्व और महत्ता

iv) लेकिन कुछ शब्दों के अर्थ में अंतर आ जाता है।

जैसे — 'कवित्व' का अर्थ है — कवि में काव्य करने की शक्ति।

'कविता' साहित्य की एक विधा है। इस विधा की एक रचना भी है।

ध्यान दीजिए कि भाववाचक संज्ञा में यह प्रत्यय नहीं लगता। हिंदी में लोग 'अज्ञानता' लिखते हैं, यह गलत है। अज्ञान भाववाचक संज्ञा है।

अभ्यास

3) नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं उन्हें 'त्व' या 'ता' या दोनों प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाइए।

i) गुरु
ii) मधुर
iii) शिव
iv) मनुष्य
v) निज
vi) सम

5.4.2 प्रत्यय 'य'

जैसे विशेषण शब्द 'स्वतंत्र' से 'स्वतंत्रता' बनता है, वैसे ही स्वातंत्र्य भी बनता है। इसकी रचना को देखिए :

मधुर → माधुर → माधुर्य

शब्द का पहला स्वर बदलता है। इसे निम्न प्रकार से भी देख सकते हैं।

अ, आ → आ	इ, ई, ए → ऐ	उ, ऊ, ओ → औ
दरिद्र — दारिद्रय	दीन — दैन्य	उदार — औदार्य
	एक — ऐक्य	शूर — शौर्य

ध्यान दीजिए कि विशेषण शब्द में केवल एक प्रत्यय लगेगा। लेकिन कुछ लोग ऐक्यता, द्रारिद्र्यता जैसे गलत शब्द लिखते हैं। या तो 'ऐक्य' लिखें या 'एकता'।

जिस तरह मानव होने की स्थिति को मानवता कहते हैं, वैसे ही 'विधवा' की स्थिति वैधव्य है। यह प्रत्यय संज्ञा में लगा है। आप बता सकते हैं कि 'प्रातिव्रत्य' का मूल शब्द क्या है? 'आधिपत्य' किससे बना है?

अभ्यास

4) क) नीचे दिये गये शब्दों में 'ता' और 'य' प्रत्यय लगाकर दो-दो शब्द बनाइए।

i) सम .....
ii) निरंतर .....
iii) धीर .....
iv) स्वस्थ .....
v) निकट .....

ख) नीचे लिखे शब्दों में 'ता' या 'य' का उचित प्रयोग कर शब्द लिखिए।

1) करुण .....

iii) सामाजिक .....

iv) सहित .....

5.4.3 प्रत्यय 'इक'

संज्ञावाचक शब्दों से विशेषण बनाने के लिए 'इक' का प्रयोग होता है। जैसे,

समाज — सामाजिक

नगर — नागरिक

यहाँ भी 'य' प्रत्यय की रचना के समान शब्द का पहला स्वर बदलता है। जैसे,

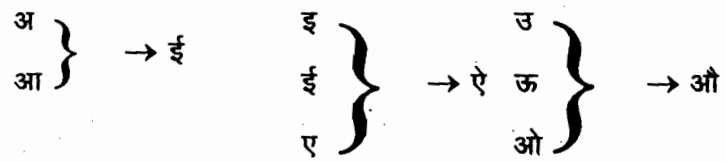

समाज — सामाजिक	दिन — दैनिक	उद्योग — औद्योगिक
धर्म — धार्मिक	नीति — नैतिक	मूल — मौलिक
मास — मासिक	सेना — सैनिक	लोक — लौकिक

आपके सामने एक समस्या रखते हैं। 'राजनीतिक' सही है या 'राजनैतिक'? आप मूल शब्द और रचना की विधि को पहचानिए। शब्द 'राजनीति + इक' है या 'राज + नैतिक' है? 'राजनीति' से शब्द बना हो तो 'राजनीतिक' सही है। इस तरह से 'अ + सामाजिक' रचना का आधार है 'असमाज + इक' नहीं। क्या आप 'अनैतिक', 'समसामयिक', 'औपनिवेशिक', 'कारुणिक' आदि शब्दों की रचना की प्रक्रिया को स्पष्ट कर सकते हैं?

अभ्यास

5) क) नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं, इन्हें 'इक' प्रत्यय लगाकर नये शब्द बनाइए। यह भी बताइए कि इनमें शब्द के पहले वर्ण की मात्रा में क्या अंतर आया है।

i) दिन ii) भूगोल iii) समूह iv) व्यक्ति

v) विज्ञान vi) मुख vii) जीव viii) निसर्ग

ख) मूल शब्द पहचाहिए।

i) कार्मिक ii) न्यायिक iii) अप्राकृतिक

iv) पौराणिक v) प्रशासनिक

5.4.4 प्रत्यय 'करण'

करना के अर्थ में यह प्रत्यय संज्ञा, विशेषण दोनों के साथ आता है। इसकी रचना देखिए।

नगर + ई + करण — नगरीकरण

सामान्य + ई + करण — सामान्यीकरण

अभ्यास

आगे शब्दों में 'करण' प्रत्यय लगाकर रचना कीजिए।

6) i) समाज ii) दृढ़ iii) मानव iv) स्थायी

नोट करें कि इसका विशेषण शब्द फिर 'कृत' से बनता है। जैसे,

नौकरी में उस आदमी का स्थायीकरण नहीं हुआ है।

नौकरी में वह आदमी स्थायीकृत नहीं हुआ है।

इस पाठ में 'औद्योगीकरण' आया है। यह अपवाद है। इसके मूल में 'उद्योग' है।

5.5 सारांश

इस इकाई में आपने 'परिवार' पाठ के माध्यम से परिवार नामक सामाजिक विज्ञान विषय का अध्ययन किया है। इससे आपः

- परिवार नामक सामाजिक इकाई को परिभाषित कर सकते हैं।
- संयुक्त एवं एकल परिवार के स्वरूप को पहचान सकते हैं।
- परिवार के महत्व और उसके रूप में आए परिवर्तनों की व्याख्या कर सकते हैं।
- निबंध रचना के दौरान किसी विचार या भाव को विस्तार दे सकते हैं और उन्हें सही क्रम दे सकते हैं।
- प्रत्यय को परिभाषित कर सकते हैं।
- "त्व", "ता", "इक", "य" और "करण" प्रत्यय के सही प्रयोग कर सकते हैं तथा इन प्रत्ययों के प्रयोगों से शब्द के अर्थ में आए परिवर्तन को बता सकते हैं।

5.6 शब्दावली*

2) **आधारभूत** : मूलभूत, बुनियादी, जो आधार में हो (आधार + भूत)

इकाई : यौगिक पदार्थ या ढाँचे के मूल अवयव जैसे परिवार समाज की इकाई है, दुकान व्यापार की इकाई है।

3) **नागरिक** : नगर का या जो नगर में रहे (किंतु नागरिक शब्द राष्ट्र में रहने वाले प्रत्येक मूल निवासी सदस्य के लिए भी प्रयुक्त होता है।)
(पर्याय) शहरी, शहर का रहने वाला।

4) **संकीर्ण** : तंग, संकुचित, छोटा। (विचारों के संकुचित होने के अर्थ में)

व्यक्तित्व : व्यक्ति की अपनी विशेषता, जिससे उसकी अलग पहचान बने।

सौहार्द : हृदय की सरलता, सद्भाव, मैत्री

बृहत्तर : और अधिक बड़ा (बृहत् + तर) समान रचना — अधिक/अधिकता

5) **आवास** : रहने का स्थान, घर (निवास — रहने का स्थान)

6) **मंडी** : किसी खास चीज की थोक बिक्री का बाज़ार (बाज़ार—जहाँ विभिन्न वस्तुओं की खरीद-फ़रोख्त होती है। हाट-गाँवों और कस्बों में सप्ताह में एक बार लगने वाला बाज़ार)

सामाजिक उत्पादन : समाज-संबंधी उत्पादन

7) **बोध** : ज्ञान, किसी चीज़ के बारे में जानना

9) **दशक** : दस वर्षों का जोड़ (शतक—सौ का जोड़)

शती(सदी, शताब्दी) — सौ वर्षों का जोड़

13) **सामंती** : किसी राज्य की वह शासन-व्यवस्था, जिसमें राज्य की भूमि बड़े-बड़े सामंतों, सरदारों या ज़मींदारों के जिम्मे रहती थी और ये उसके बदले राजा को आर्थिक और सैनिक सहायता देते थे।

पुश्तैनी : पीढ़ी-दर-पीढ़ी (पुश्त-दर-पुश्त) पिछली पीढ़ी से विरासत के रूप में प्राप्त सम्पत्ति, व्यवसाय आदि का अधिकार।

सामूहिक श्रम : मिल-जुल कर किया गया कार्य

14) **पितृसत्तात्मक**: समाज की रचना की वह प्रथा या पद्धति जिसमें पिता या गृह-स्वामी की ही सत्ता सर्वोपरि मानी जाती है।

(मातृसत्तात्मक : जिसमें माता की सत्ता सर्वोच्च हो)

15) **सर्वोपरि** : सबसे ऊपर, सबसे पहले

16) **पुंजोत्पादन**: कारखाने आदि में किसी वस्तु का बड़ी संख्या में या बड़े पैमाने पर किया गया उत्पादन। (पुंज = समूह)

औद्योगीकरण : अनेक कारखानों, उद्योगों आदि की स्थापना, विस्तार आदि द्वारा देश को उद्योग-प्रधान बनाना

शहरीकरण: शहरों की स्थापना और विस्तार की प्रवृत्ति

19) **जाति** : वर्ण या वंश का भेद सूचित करने वाला वर्ग

नस्ल : जैविक (वर्ण, हड्डी आदि) और क्षेत्रीय आधार पर किसी जाति या जातियों का वर्गीकरण जैसे नीग्रो, मंगोली आदि नस्ल। इसी को 'संजाति' भी कहते हैं।

मानवता : मनुष्य के लिए उचित गुण या भाव

बंधुत्व : भाईचारा (पर्याय—भ्रातृत्व)

20) **सहचर** : साथ चलने वाला, साथी (इसी तरह आपने 'जलचर' आदि शब्द देखे) (सह = साथ)

21) **संबंध-विच्छेद** : संबंध का टूटना (तलाक के अर्थ में)

22) **निराकरण** : दूर हटाना, दूर करना, समाधान करना

5.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

कामता प्रसाद गुरु : **संक्षिप्त हिंदी व्याकरण**, नगरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

5.8 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

1) i) सही ii) गलत iii) गलत iv) सही v) गलत

2) i) व्यक्तित्व ii) श्रम, संपत्ति iii) पितृसत्तात्मक iv) समानता v) शिक्षा

3) i) मामा ii) त्याग iii) जनता iv) तात्कालिक

4) i) सबसे बड़ी उम्र का पुरुष ii) सामंती iii) औद्योगीकरण

iv) वैयक्तित्व v) लोकतांत्रिक

5) i) ग ii) घ

6) i) परिवार से व्यक्ति को यह प्रेरणा मिलती है कि वह सिर्फ़ अपने लिए नहीं वरन् सभी के लिए जिये, सभी के सुख-दुःख में सहभागी बने।

ii) परिवार के लिए जीवनयापन की व्यवस्था करते हुए जब हम सामाजिक उत्पादन की प्रक्रिया से अपने को जोड़ते हैं तो इससे समाज की प्रगति में सहायता मिलती है।

iii) एकल परिवार का अर्थ है वह परिवार जिसमें पति-पत्नी और उनके अविवाहित बच्चे हों।

iv) क) बूढ़े और अक्षम माता-पिता के प्रति के प्रति उपेक्षा का भाव।

ख) परिवार के स्थायित्व में कमी।

v) क) स्त्रियाँ पुरुषों के अधीन मानी जाती थीं, उन्हें कोई स्वतंत्रता प्राप्त नहीं थी।

ख) पिता की संपत्ति में पुत्री का कोई अधिकार नहीं माना जाता था।

अभ्यास

1) i) ख ii) ग iii) क iv) ख

2) i) सामाजिक ii) भावनात्मक iii) जीवनयापन, योगदान

iv) समस्त परिवार v) कृषि vi) पुश्तैनी vii) ढाँचे

viii) जन्म दिया ix) समता x) नारी स्वातंत्र्य

3) i) गुरुत्व, गुरुता ii) मधुरता iii) शिवत्व

iv) मनुष्यत्व, मनुष्यता v) निजता, निजत्व vi) समता

4) क) i) समता, साम्य ii) निरंतरता, नैरंतर्य iii) धीरता, धैर्य

iv) स्वस्थता, स्वास्थ्य v) निकटता, नैकट्य

ख) i) कारुण्य ii) महानता iii) सामाजिकता iv) साहित्य

5) क)

i)	दैनिक	इ - ऐ	v)	वैज्ञानिक	इ - ऐ
ii)	भौगोलिक	ऊ - औ	vi)	मौखिक	उ -औ
iii)	सामूहिक	अ - आ	vii)	जैविक	ई - ऐ
iv)	वैयक्तिक	इ - ऐ	viii)	नैसर्गिक	इ - ऐ

ख) i) कर्म ii) न्याय iii) प्रकृति

iv) पुराण v) शासन

6) i) सामाजीकरण ii) दृढ़ीकरण iii) मानवीकरण iv) स्थायीकरण

अनुकार्य

अपने परिवार के संबंध में 2-3 पृष्ठों में छोटा निबंध लिखिए और उपर्युक्त पाठ के संदर्भ में उसकी विशेषताओं को पहचानिए।

आप द्वारा लिखे गये पाठ में कौन-कौन से प्रत्यय प्रयुक्त हुए हैं, यह भी पहचानिए।